43

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्॥ ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115
July 2022
Issue 16, Vol. 1(2)

Impact Factor
5.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

हिमाचल प्रदेश विशेषांक

विशेषांक सम्पादक :
सबीना जहां

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

43

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

OPPO Reno8 T 5G

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	सवीना जहां	9-9
2.	प्रेमचंद के कथा साहित्य में किसानों की स्थिति	अमन सूद	10-12
3.	हिजड़ा समुदाय से रूबरू कराता यमदीप	रेणुका देवी	13-18
4.	जयश्रीरॉय के उपन्यास दर्दजा में स्त्री के मनोवैज्ञानिक आयाम	रेखा कुमारी	19-22
5.	योगेश्वर शर्मा के कहानी संग्रह 'आ गया भराड़ीघाट' में सामाजिक परिवर्तन व संवेदना	डॉ. सन्या कुमारी	23-30
6.	Environment Pollution	Rama Nand	31-33
7.	PUBLIC DISTRIBUTION SYSTEM AND FOOD SECURITY IN TRIBAL AREAS OF HIMACHAL PRADESH	Santosh Kumar, Prof. Sanjeev Kumar Mahajan	34-39
8.	ग्रामीण बाल-विमर्श	सुरिता देवी	40-43
9.	सामाजिक चेतना के संदर्भ में लाहौली लोक गीतों की प्रासंगिकता	डॉ0 अशोक कुमार	44-48
10.	हिन्दी भाषा और प्रवासी साहित्य	ललिता शर्मा	49-52
11.	Job Satisfaction and Professional Commitment of Secondary School Teachers with special reference to Tribal Area	Raj Devi, Dr. Prabha Jishtu	53-59
12.	भारतीय समाज में नारी की बदलती स्थिति प्राचीनकाल से स्वतंत्रता प्राप्ति तक का अध्ययन	काकु राम	60-64
13.	हिमाचल प्रदेश के लोक जीवन में लोकगीतों की प्रासंगिकता	प्रोमिला देवी	65-69
14.	Indian Constitution & Human Right	Geeta Kumari	70-75
15.	People Participation through E-Governance : Special Reference of Tutu Block in District Shimla *The Future of India Lies In Its Villages – Mahatma Gandhi*	Prof. L.R.Verma, Vivek Kumar Shukla	76-83
16.	Population Ageing and Elderly Care: A Case of India with Special Focus on Himachal Pradesh	Abhishek Bhagra	84-91
17.	भारतीय दर्शन में पुनर्जन्म की अवधारणा का विश्लेषणात्मक अध्ययन	शिविका	92-96
18.	Challenges and Threats Towards Empowerment of Women in Indian Society : A Study	Itika	97-103

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 5.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2022 Page No. : 44-48

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

सामाजिक चेतना के संदर्भ में लाहौली लोक गीतों की प्रासंगिकता

डॉ0 अशोक कुमार

सहायक प्राध्यापक, राजकीय महाविद्यालय, बंजार, जिला कुल्लू।

जनजातीय क्षेत्र लाहौल स्पिति जो समुद्रतल से लभग 3165 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। हिमाच्छादित पहाड़ विभिन्न प्रकार के फूलों से सुसज्जित, टेढ़ी–मेढ़ी पगडंडियों, मुख्य घाटियों बेली के पेड़ों, फसलों से लहलहा रहे खेत और नैसर्गिक सौंदर्य को देख कर स्वर्ग के समान प्रतीत होता है। कोई भी मानव हिमालय के इस मनोहर दृश्य को देख कर यहां के लोक जीवन की सार्थकता को अनुभव कर सकता है। ऊंचे पर्वत अधिकतर समय तक बर्फ से ढके होने के कारण यह क्षेत्र लगभग छः महीन पूरे विश्व से कट जाता है। लाहौल के इस दुर्गम घाटी में यहां के निवासी प्रकृति के प्रतिकूल प्रकोप को सहते हुए भी प्रकृति सौंदर्य के प्रेमी है। आज से लगभग 60–70 वर्ष पहले पर्याप्त यातायात सुविधाएं न होने के कारण यहां के निवासी दुर्गम क्षेत्रों में रहते हुए भी अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। लेकिन आज सुगम यातायात, दूरध्वनि आदि सुविधा के कारण वर्ष के अधिकतर महीने अनुकूल परिस्थितियों में सहज जीवन जीते हैं। लाहौल स्पिति, केलांग, उदयपुर तथा काजा तीन तहसीलों में विभाजित है। क्षेत्रफल की दृष्टि से यह हिमाचल का सबसे बड़ा जिला है।

लाहौल मुख्य रूप से रांगलो घाटी के कोकसर, सिस्सू, गोंदला और घुशाल कोठी, गाहर घाटी के कोलंग, करदंग, गुमरंग बरबोग और पट्टन घाटी के तांदी, बरबोग, रानिका, शान्शा, जोबरंग और जाहलमा 14 कोठियों में बंटा हुआ है। यहां के जटिल भौगोलिक परिस्थितियों के बावजूद लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के कारण लोगों के जीवन शैली में परिवर्तन हुआ है, लेकिन यहां त्योहारों, लोक संस्कृति, परंपरा आज भी जीवन मूल्यों को सजाए हुए है। किसी भी अंचल की जीवन और संस्कृति, परंपरा आज भी लोकगीतों में प्रतिबिम्बित होता है। मानव सामाजिक एवं संवदनशील प्राणी है। सबके जीवन में हर्ष–विषाद, आशा–निराशा, राग–विराग आदि भावनाओं का अभिव्यक्त होना स्वाभाविक है। यह भावनाएं शब्दों के माध्यम से लयबद्ध होकर गीतों एवं साहित्य के अन्य विधा के रूप में सामने आते हैं। आज के परिवेश में प्रत्येक व्यक्ति यश चाहता है, लेकिन ग्रामीण समाज की अपेक्षा शहरी समाज में यह प्रवृति अधिक है।

लोकगीता के सम्बन्ध में आचार्य डॉ फ्रांसिस चाइल्ड मत है– "लोकगीतों में उसके रचायिता के व्यक्तित्व का सर्वथा अभाव रहता है। उसकी वाणी में तो उसकी रचना अवश्य मिलती है, परन्तु उसका व्यक्तित्व बिल्कुल नहीं मिलता है। लोकगीतों का रचायिता इन गीतों की सृष्टि कर जनता के हाथों इन्हें समर्पित कर स्वयं अन्तर्ध्यान